eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

काव्य में संगीत के तत्व

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0।

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

संगीत के अन्तर्गत वर्ण–संगीत, शब्द–संगीत, लय और तुक इत्यादि तत्व आते हैं जो भावानुकूल भाषा के निर्माण में बड़ा महत्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्दः– काव्य, संगीत के तत्व, आन्तरिक संगीत एवं वाह्य संगीत।

Introduction

काव्य में संगीत के तत्वों का समावेश दो रूपो में होता है–

1 आन्तरिक संगीत के रूप में

2 वाह्मय संगीत के रूप में

आन्तरिक संगीत

आन्तरिक संगीत के अन्तर्गत वर्ण–संगीत, शब्द–संगीत, लय और तुक इत्यादि तत्व आते हैं जो भावानुकूल भाषा के निर्माण में बड़ा महत्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं। काव्य के प्रतिपाद्य भाव तथा उनकी अभिव्यक्ति में प्रयुक्त शब्दों से उत्पन्न ध्वनि एक–दूसरे के पूरक होते हैं, उनका रूप पूर्णतः संश्लिष्ट होता है तथा शब्दों में निहित ध्वनियों के विशिष्ट तथा अनुकूल सामंजस्य से प्रतिपाद्य के अनुकूल भाषा का निर्माण होता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, ''कविता एक अपूर्व रसायन है। उसके रस की सिद्धि के लिये बड़ी सावधानी, बड़ी मनोयोगिता व बड़ी चतुराई की आवश्यकता होती है। रसायन सिद्ध करने में आँच का न्यूनाधिक होने से रस बिगड़ जाता है वैसे ही यथोचित शब्दों का उपयोग न करने से काव्य रूपी रस भी बिगड जाता है। किसी–किसी स्थल–विशेष पर संयुक्ताक्षर वाले शब्द अच्छे लगते हैं परन्तु सर्वत्र ललित और मधुर शब्दों का प्रयोग करना ही उचित है। शब्द चुनने में अक्षर–मैत्री का विशेष विचार रखना चाहिए।''

गीतों में आन्तरिक संगीत की अनविार्यता का विवेचन करते समय डा0 दीनदयालु गुप्त ने जो मत प्रकट किया है वह भी इस प्रसंग में उल्लेखनीय है– ''गायक कवि को अपने पदों को विशेष राग, विशेष स्वरों से मण्डित करके उन्हें ताल में बाँधना होता है, ताल–बद्ध रूप प्रदान करना होता है। अतः संगीत के कलात्मक–पक्ष के आग्रह के कारण शब्दों में लोच लाना तथा परिवर्तन करना अनिवार्य हो जाता है। स्वरों का स्थूल स्वरूप, स्वर–संगीत, मुक्त स्वरों का निरूपण तथा उसकी स्थापना, किसी निश्चित स्वर से गीत के वाक्य का आरम्भ करके उसे रागात्मक वाक्य का रूप प्रदान करना तथा इस प्रकार गीत के वाक्य को संगीतात्मक वाक्य का रूप प्रदान करते हुए एक–एक भावात्मक

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 01, Jan 2021

कल्पना को पूरा करते जाना, ताल के आघात के साथ गीत के वाक्यों का सौष्ठव बैठाना तथा रागात्मक लम्बाई का ध्यान रखना, संगीत की इन कलात्मक विशेषताओं पर ध्यान रखने के कारण भ्रमर का भँवरा, माह का महियां आदि विभिन्न उच्चारण बन जाना, स्वाभाविक है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी काव्य और संगीत के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध का विवेचन किया है। ''काव्य शब्दों के एक विशेष आरोह–अवरोह, संगति–संक्रम का सम्बद्ध तारतम्य है। शब्द एक ओर जहाँ अर्थ की भावभूमि पर पाठक को ले जाते हैं वहाँ नाद के द्वारा श्रव्यमूर्त विधान भी करते हैं। काव्य–कला का आधार भाषा है जो नाद का ही विकसित रूप है, अस्तुः काव्य और संगीत दोनों के आस्वादन का माध्यम एक ही है। केवल अन्दर इतना है कि एक का आधार नाद का स्वर व्यंजनात्मक स्वरूप है तो दूसरे का आधार नाद का आरोह और अवरोह है। काव्य और संगीत दोनों स्थिर रूप में एक ही बार नहीं ग्रहण किये जा सकते। प्रत्येक पंक्ति के साथ कविता का और स्वर के प्रत्येक आरोह तथा अवरोह के साथ संगीत का प्रभाव आगे बढ़ता है। ''चित्र को हम एक ओर से दूसरी ओर दाँए से बाँए जिस प्रकार चाहें देखकर समान आनन्द प्राप्त कर सकते हैं, पर कविता और संगीत मे गति आगे की ओर बढ़ती है। इस पीछे से आगे और आगे से पीछे बढ़कर एक सा आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते।

वाह्य संगीत

काव्य में वाह्य संगीत के तत्वों का प्रयोग तभी होता है जब कवि संगीतज्ञ भी होता है और संगीत–तत्तयों का समावेश वह जागरूक होकर करता है। साधारण रूप में इसके समावेश के पौंच मुख्य रूप होते हैं। इन्हीं पाँच मुख्य रूपों के आधार पर अष्टछापी कवियों के काव्य में संगीत तत्वों की चर्चा आगामी पृष्ठों पर की गयी है। यह पाँच मुख्य रूप इस प्रकार हैं

(क) काव्य में संगीत तत्वों की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग।
(ख) काव्य में संगीत के अनुकूल लय की योजना।
(ग) काव्य में संगीत–शैलियों का प्रयोग।
(घ) काव्य में राग–रागिनियों, नृत्य रूपों तथा तालों का प्रयोग।
(ड) छन्द विधान

प्रथम चार तत्वों का सम्बन्ध निश्चित रूप से बाहय संगीत से है। छन्द विधान के द्वारा जहाँ एक ओर काव्य में आन्तरिक संगीत का समावेश किया जाता है, वूसरी ओर उसके द्वारा ताल और राग से सामन्जस्य बैठाने में भी सहायता मिलती है।

संदर्भ सूची–

1. रसज्ञ–रंजन, महावीर प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ–6
2. अष्टछाप और वल्लभ – सम्प्रदाय, डा0 दीनदयालु गुप्त, भाग–2, पृ–881
3. साहित्य का मर्म, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ–11
4. साहित्य का मर्म, पृष्ठ–11